ओम् शान्ति 5-4-20 मधुबन

## समय प्रमाण योग तपस्या के लिए बापदादा का विशेष ईशारा

## (वतन का दिव्य सन्देश - मोहिनी बहन-न्युयार्क)

**आज** दादी जानकी जी के निमित्त बाबा को भोग लगाया, तो बाबा ने भोग स्वीकार किया और दादी को भी स्वीकार कराया। मैंने बाबा को पूछा - बाबा दादी ऐसे क्यों चली गई? हम उन्हें विदाई भी नहीं दे सके, ऐसा तो पहले कभी नहीं हुआ। दीदी मनमोहिनी ने, दादी प्रकाशमणि ने जब शरीर छोड़ा, हम सब वहाँ पहुंचे थे! पर अभी ऐसा क्यों हुआ कि हम कोई भी नहीं पहुंच सके। तो बाबा मुस्कराये, मैंने बाबा को कहा बाबा सबने पूछा है कि हम दादी को विदाई देने क्यों नहीं पहुंच सके! बाबा ने कहा बच्ची, इसमें बड़ा राज़ है। वर्तमान में समय बहुत नाज़ुक चल रहा है। इसलिए साकार में तो पहुंचना सम्भव नहीं था, ऐसे समय पर आप बच्चों का बुद्धियोग बाबा के साथ होना चाहिए और हर एक को अपने फरिश्ते स्वरूप में भी रहना है। तो जब आप अपने फरिश्ते स्वरूप में होंगे तभी दादी को मिल सकेंगे। इसलिए दादी का वहाँ (वतन में) होना भी जरूरी है। बाबा ने कहा इस समय दो अभ्यास बहुत जरूरी हैं - एक तो बुद्धियोग बाबा के साथ हो और दूसरा फरिश्ता स्थिति का अभ्यास हो। अभी यह समय और टेन्शन बढ़ने वाला है, कई तरह से सीरियसनेस बढ़ेगी। ऐसे समय पर आप बच्चों को चाहे आप घर पर हैं या सेन्टर पर हैं, अभी आपको अधिक से अधिक तपस्या करनी है। अभी तक जो आप कर रहे हैं वह भविष्य में काफी नहीं होगा। योग भी केवल चलते फिरते नहीं लेकिन भट्ठी के रूप में योग करना है। अमृतवेला और दिन में कई बार आपको विधिपूर्वक बैठकर योग करना है। योग में विशेष बाबा की शक्तियों को ग्रहण करें। उस समय आपको मन्सा सेवा के बारे में भी सोचने की आवश्यकता नहीं है क्योंकि जब आप तपस्या करेंगे तो दूसरों को स्नेह और शक्ति के वायब्रेशन स्वत: प्राप्त होंगे। कई बच्चे सोचते हैं हमें मन्सा सेवा करनी चाहिए लेकिन जैसे मोमबत्ती जलाते हो तो वो यह नहीं सोचती कि मुझे प्रकाश फैलाना है, यह तो स्वत: ही होता है। तो आप भी अपनी ज्योति जगाकर रखो।

आज बाबा बच्चों को बहुत क्लीयर डायरेक्शन दे रहे थे कि अभी योग भट्ठी अधिक घण्टे की जाए, उसमें विदेही, अशरीरी एवं फरिश्ता स्थिति का अभ्यास बहुत आवश्यक है। बुद्धियोग बाबा के साथ हो, कोई भी कर्मेन्द्रियों की आकर्षण न हो और सेवा का भी संकल्प नहीं हो क्योंकि बाबा ने यह समय शक्तियां जमा करने के लिए दिया है, दूसरे तो स्वत: आपसे शक्ति का अनुभव करेंगे। तो दादी का इस समय जाना बहुत महत्वपूर्ण है। पर मैंने कहा बाबा हम तो खुश नहीं हैं। तो बाबा ने कहा आप देखो, वर्तमान समय आवश्यकता क्या है? जैसे बाबा ईशारा दे रहे थे कि बहुत सीरियस परिस्थितियां होने वाली हैं। तो हमारे पास यह जो समय है, इसे और ज्यादा गम्भीरता से लेना चाहिए। बाबा जिस तरह से कह रहे थे ऐसे लगता था कि बाबा चाहते हैं बच्चे अभी योग में लवलीन स्थिति का, अशरीरी व फरिश्ता स्थिति का अनुभव करें क्योंकि अभी बहुत-बहुत दु:ख बढ़ेगा और उस दु:ख की, कष्ट की लहर आपको थोड़ा भी टच नहीं करे, यह तभी होगा जब आप बाबा के साथ लवलीन होंगे। बुद्धियोग एक बाप के साथ होगा। इस समय की सर्विस तपस्या में ही है। तो सभी ज्यादा से ज्यादा बैठकर तपस्या करें, यही विश्व या जिनको भी आप जानते हैं उनकी सच्ची सेवा है। तो जितना सम्भव हो, सभी कार्यो से, वाचा से कुछ दिन के लिए फ्री रहें। सेन्टर पर योग भट्ठी तपस्या के रूप में करें तो घरों में रहने वालों को भी प्रेरणा मिलेगी। जितनी बार आप बैठकर योग कर सको, करो। यह इस समय बहुत महत्वपूर्ण है। तो आज बाबा यह श्रीमत दे रहे थे कि वाचा और कर्मणा की सेवा के बजाए जितना हो सके, साइलेन्स में रहो। केवल वाचा की साइलेन्स नहीं लेकिन मन और कर्म की भी साइलेन्स हो। तो अभी विश्व के लिए दादी का जाना बहुत महत्वपूर्ण था। अभी आप सबकी जिम्मेवारी और बढ़ गई है, अभी सबका बुद्धियोग सदा एक बाप के साथ ही रहे, ऐसी तपस्या करनी है। फिर सभी को बाबा ने बहुत-बहुत यादप्यार दी। अच्छा - ओम् शान्ति।